

## दुआए जौशन सगीर

कुछ खास मातेबर किताबों में दुआए जौशन सगीर का जिक्र जौशन कबीर से ज्यादा शरह के साथ आया है. कफ़'अमी ने किताब "बलादुल अमीन" के हाशिये में फ़रमाया है की यह बहुबुलंद मर्तबा और बड़ी कद्र व मंज़लत वाली दुआ है जब हादी अब्बासी ने ईमाम मूसा काज़िम (अ:स) के कत्ल का इरादा किया तो आप ने यह दुआ पढ़ी, और अपने ख्वाब में अपने जद'दे बुजुर्गवार रसूल अल्लाह (स:अ:व:व) को देखा की आप फ़रमा रहे हैं की हक्के तआला आप के दुश्मनों को हालाक कर देगा! यह दुआ सय्यद इब्ने तावूस ने भी "मुहज अल-दावात" में नक़ल की है लेकिन कफ़'अमी और इब्ने तावूस के नुस्खों में कुछ इख़्तलाफ है, यहाँ हम इसे कफ़'अमी की किताब "बलादुल अमीन" से नक़ल कर रहे हैं और दुआ यह है :

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व आले मुहम्मद (तीन बार)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम (खुदा के नाम से शुरू, जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है!)

मेरे माबूद कितने ही दुश्मनों ने मुझ पर अदावत की तलवार खींच रखी है और मेरे लिये अपने खंजर की धार तेज़ कर ली है और इसकी तेज़ नोक मेरी तरफ़ कर रखी है और मेरे लिये ज़हर बुझे हुए क्रातिल तैयार कर रखे हैं और अपने तीरों के निशाने मुझ पर बाँध लिये हुए हैं और इसकी आँख मेरी तरफ़ से झपकती नहीं और ईस ने मुझे तकलीफ़ देने की ठान रखी है और मुझे ज़हर के घूँट पिलाने पर आमदा है, लेकिन तू ही है जिस बड़ी सख्तियों की मुकाबिल मेरी कमज़ोरी और मुझ से मुकाबला करने का क़सद रखने वालों के सामने मेरी नाताक़ी और मुझे पर योरिश करने वालों के दरम्यान मेरी तन्हाई को देखा जो मुझे ऐसी तकलीफ़ देना चाहते हैं जिसका सामना करने का मैंने सोचा भी न था बस तुने अपनी कुव्वत से मेरी हिमायत की और अपनी नुसरत से मुझे सहारा दिया और मेरे दुश्मन की तलवार को कुंद कर दिया और तुने उन्हें रुसवा कर दिया जबकि को वो अपनी बहुत बड़ी तादाद और सामान के साथ जमा थे, तुने मुझे दुश्मन पर ग़ालिब किया और इसने मेरे लिये मकर व फ़रेब के जो जाल बुने थे तुने मेरी जगह इनमे इन्ही को फंसा दिया तो न इसकी तशनगी दूर हुई न इसके गुस्से के आग ठंडी हुई और अफ़सोस के साथ इसने अपनी उंगलियाँ चबा लीं और वो पस्त हो गया जब इसके झंडे गिर पड़े! बस हम्द तेरे लिये ही है परवरदिगार की तू तवाना है जिसकी शिकस्त नहीं होती और तो वो बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मुहम्मद (स:अ:व:व) और आले मुहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों का शुक्र अदा करने वालों और पाने एहसानों के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद किसी सरकशी ने मेरे खिलाफ़ मकर से मुझे पर ज़्यादती की और मुझे फांसने के लिये शिकारी जाल बिछाया और मुझे अपनी फुर्सत के सुपुर्द कर दिया और ईस तरह ताक लगाई है जैसे दरिंदा अपने भागे हुए शिकार को पकड़े जाने तक देखता रहता है हालाकि यह शख्स मुझ से मिलने में खुशगवार और कुशादवर है और अस्ल में बद-नियत है बस जब तुने इसकी बद-बातिनी को और अपनी मिल्लत के एक फ़र्द के लिये इसकी खबासत को देखा यानी मेरे लिये इसे सितमगर पाया तो इसे तुने सर के बल ज़मीन पर फ़ेंक दिया और इसकी साख्तगी को जड़ से उखाड़ डाला, बस तुने इसे इसी के खोदे हुए कुँए में धकेला और इसीके खोदे हुए गढ़े में फेंका और तुने

इसके मुंह पर इसके पांव की खाक डाली और इसके बदन और रिज्क में गुम कर दिया, इसे इसी की पत्थर से मारा और इसकी गर्दन इसके कमान से छेदी, इसका सर इसी के तलवार से उड़ाया और इसे मुंह के बल गिराया इसका मकर इसी की गर्दन में डाला और पशेमानी की जंजीर इसके गले में डाल दी इसकी हसरत से इसे फना किया बस मेरा वोह दुश्मन अकड़बाज और जलील हुआ और घुटनों के बल गिरा और सरकशी व तुन्दी के बाद रुसवा हुआ और अपने मकरो-फरेब की रस्सियों में जकड़ा गया, यह वो फन्दा है जिस में वो मुझे अपने तसल्लुत में देखना चाहता था और ऐ परवरदिगार अगर तेरी रहमत मुझ पर न होती तो करीब था के मेरे साथ वोही होता जो इसके साथ हुआ, बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परवरदिगार के तू वो तवाना है जिसे शिकस्त नहीं, तू वो बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता, मोहम्मद (स:अ:व:व) व आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फरमा और मुझे अपने नेमतों का शुक्र करने वालों और अपने एहसानों के याद करने वाली में करार दे, खुदाया! मेरे कई हासिद हसरत से गुलुगीर हुए और दुश्मन गुस्से में जल भुन गए और तेजी ज़बान से मुझे अज़ीयत दी और मुझे अपनी आँखों की पलकों से ज़ख्मे जिगर लगाए और मुझे अपनी नफ़रत के तीरों का निशाना बनाया, मेरे गले में फन्दा डाला तो ऐ परवरदिगार मैंने तुझे लगातार पुकारा के तेरी पनाह लूं जो यकीनी है की तू जल्द क़बूलियत करने वाला है, मेरा भरोसा तेरे हुस्ने दफ़ा'अ पर रहा है जिसकी मुझे पहले ही मारेफ़त है, मैं जानता हूँ की जो तेरे साया-ए-रहमत में आ जाए तो तू इसकी पर्दावारी नहीं करता और जो तुझ से मदद माँगता रहे मसाएब इसकी सरकोबी नहीं कर सकते, बस तू अपने कुदरत से तो मुझे दुश्मन की अज़ीयत से महफूज़ फ़रमा, बस हम्द तेरे ही लिये है! ऐ परवरदिगार! के तू वो तवाना है जिसे शिकस्त नहीं होती तू वो बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) व आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फरमा और मुझे अपनी नेमतों का शुक्र अदा करने वालों और अपने एहसानों के याद करने वालों में करार दे, खुदाया कितने ही ख़तरनाक बादलों को तुने मेरे सर से हटाया और नेमतों के आसमान से मुझ पर मेंह बरसाया और इज्जत व आबरू की नहरें जारी की और सख्तियों के सर'चश्मों को ना'पैद कर दिया और रहमत का साया फैला दिया और आफ़ियत की जिरह पहना दी और दुखों के भवर तोड़ कर रख दिए और जो कुछ हो रहा था इसे काबू कर लिया जो तू करना चाहे इससे आजिज़ नहीं और जिसका तू इरादा करे इसमें तुझे दुशवारी नहीं बस हम्द तेरे ही लिये है ऐ परवरदिगार के तू वो तवाना है जिसे शिकस्त नहीं होती और तू वो बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता, मोहम्मद (स:अ:व:व) व आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फरमा और मुझे अपनी नेमतों का शुक्र अदा करने वालों और अपने एहसानों के याद करने वालों में करार दे, ऐ अल्लाह तुने बहुत सी ख़ुश ख़्यालियों को हकीकत बना दिया और मेरी तंगदस्ती को दूर फ़रमा दिया और मेरी बेचारगी को मुझ से दूर किया और मार डालने वाले थपेड़ों से अमन दिया और मुशक्कत की बजाये राहत दी जो तू करे मेरे दुश्मन ईस पर तुझे कुछ कह नहीं सकते की वो तेरे सामने जवाबदेह हैं, अता व बख़्शीश से तेरा खज़ाना कम नहीं होता, जब भी तुझ से माँगा गया तो तुने अता किया और सवाल न किया गया तो भी तुने दिया और तेरी दरगाहे आली से जो तलब किया गया तुने ईस से दरेग न किया न ही देर की, मगर यह के नेमत दी और एहसान किया, और बहुत ज़्यादा दिया! ऐ परवरदिगार तुने खूब दिया और मैंने तो तेरी हुर्मतों को तोड़ा और तेरी नाफ़रमानी करने में ज़ुरत की और तेरी हदों से तजावुज़ किया, और तेरे डराने के बावजूद बे-परवाई की, और अपने और तेरे दुश्मनों की इता'अत की, लेकिन ऐ मेरे परवरदिगार! ऐ मेरे मददगार मेरी ना-शुक्रा पर तुने अपने एहसान को मुझ से नहीं रोका, और

मेरी ना-फर्मानियाँ ईन इनायतों में आड़े नहीं आई, ऐ माबूद! यह हाल है तेरे ईस जलील बन्दे का जो तेरी तौहीद को मानता है, और खुद को तेरे हक की अदाएगी में कसूरवार गर्दान्ता है और गवाही देता है के तूने ईस पर नेमत की बारिश फ़रमाई और इसके साथ अच्छा बर्ताव किया और ईस पर तेरा एहसान ही एहसान है बस ऐ मेरे माबूद और ऐ मेरे आका मुझे अपने फज़ल से मुझे वो रहमत नाज़िल फ़रमा जिस का ख्वाहाँ हूँ ताकि मैं इसे जीना बना कर तेरी रज़ाओं तक पहुँच पाऊँ और तेरी नाराज़गी से बच सकूँ, तुझे वास्ता है अपनी इज़्जत व सखावत और अपने नबी मुहम्मद (स:अ:व:व) का, बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से बन्दे ऐसे हैं जो मौत की शिकंजे में सुबह और शाम करते हैं जब की दम सीने में घुट जाता है और आँखें वो चीज़ देखती हैं जिस से बदन काँप उठता है और दिल घबराहट में जाता है और मैं ईन हालातों में अमन में रहा हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से ऐसे बन्दे हैं जो सुबह और शाम करते हैं बीमारी और दर्द में आहज़ारी के साथ और गम से बेकरार होते हैं, न कोई चारा रखते हैं, न इन्हें खाने पीने का मज़ा भला लगता है, लेकिन मैं जिस्मानी लिहाज़ से तंदुरुस्त और जिंदगी के लिहाज़ से आराम में हूँ और सब तेरा ही करम है बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से ऐसे बन्दे हैं जो सुबह और शाम करते हैं डरे हुए दबे हुए सहमे हुए, कांपते हुए, भागे हुए दुत्कारे हुए तंग कोठरी में घुसे हुए और ओट में छुपे हुए के यह ज़मीन अपनी वुस'अतों के बा'वजूद इनके लिये तंग है, न ईन का कोई वसीला है न निजात का ज़रिया, और न पनाह की जगह है, जबकि मैं ईन बातों से अमन व चैन और आराम व आसाइश में हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने सुबह और शाम की जबकि दुश्मनों के हाथों हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़े हैं के इनपर रहम नहीं किया जाता, वो अपने जन व फ़र्जन्द से जुदा, कैदे तन्हाई में हैं अपने शहर और अपने भाइयों से दूर हर लम्हा ईस ख्याल में हैं के इन्हें किस तरह कतल किया जाएगा और किस किस तरह ईन के जोड़ काटे जायेंगे और मैं ईन सब सख्तियों से महफूज़ हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से ऐसे बन्दे हैं जिन्होंने सुबह और शाम की, हालते जंग और मैदाने किताल में जबकि इनपर दुश्मन छाये हुए हैं और हर तरफ़ से इनपर आब्दारे शम्शीरी और तेज़ धार नैजे और दीगर असलहा के वार हो रहे हैं इनकी हिम्मत टूट चुकी है,

वो नहीं जानते के अब क्या करें कोई जगह नहीं जहां भाग के चले जाएँ, वो ज़ख्मों से चूर हैं या अपने खून में गलताँ गोदों की सुर्मों के ज़द में बे बस पड़े हैं वो एक घूँट पानी को तरस रहे हैं या अपने ज़न व फ़र्ज़न्द को देखने को तड़प रहे हैं और इनती ताकत नहीं रखते, और मैं इन सब दुखों से बचा हुआ हूँ, बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से बन्दे ऐसे हैं जिन्होंने सुबह और शाम की समुन्दरों की तारीकियों और बाद व बारां के बला खेज तूफानों में बीफरी हुई मौजों के खतरों में जब के इन्हें डूब के मर जाने का खौफ़ हो वो इस से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं पाते या वो घर चमकती बिजलियों में घिरे हुए हैं या बे मौत मर जाने या जल जाने या दम घुट जाने या ज़मीन में धंसने या सूरत बिगड़ने या बेमारी के हाल में हैं और मैं इन सारी तकलीफों से अमन में हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद बहुत से बन्दे ऐसे हैं जिन्होंने सुबह और शाम की हालत-ए-सफ़र में अपने ज़न व फ़र्ज़न्द से दूर ब्याबानों में रास्ता भूले हुए हैं, वो वहशी दरिदों, चौपायों और कांटे वाले कीड़े मकोड़ों में यकता व तन्हा परेशान हैं जहां इनका कोई चारा नहीं और न इन्हें कोई राह सूझती है या सर्दों में ठीठरते या गर्मों में जलते हैं या भूक या उरयानी वगैरा ऐसे सख्तियों में गिरफ्तार हैं जिन से मैं एक तरफ़ हूँ और इन सब दुखों से आराम में हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद, ऐ मेरे आका बहुत से बन्दे ऐसे हैं जो सुबह व शाम करते हैं जबकि वो मोहताज, बे खर्च, बे लिबास बे नवासिर नगू, गोशा नशी, खाली पेट, और प्यासे हैं वो देखते हैं की कौन आता है जो हमें खैरात दे या ऐसा आब्रूमंद बंदा जो तेरे यहां मुझ से ज़्यादा इज्जतदार है और तेरी ईबादत और फरमाबरदारी में बढ़ा हुआ है वो हिकारत की कैद में है, इस ने तकलीफों का बोझ अपने कन्धों पर उठा रखा है और गुलामी की सख्ती और बंदगी की तकलीफ और तलवार का ज़ख्म खाए हुए या बड़ी मुसीबत में गिरफ्तार है के जिन को सह नहीं सकता सिवाए इस मदद के जो तू करे और मुझे खिदमतगार नेमतेँ आफ़ियत और इज़्जत हासिल है, मैं इन चीज़ों से अमान में हूँ बस हम्द तेरे ही लिये है, ऐ परदिगार के तू तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, ऐ माबूद और ऐ मेरे मौला बहुत से ऐसे बन्दे हैं जिन्होंने सुबह और शाम की जबकि वो अलील बीमार कमज़ोर व बदहाल हैं, बिस्तरे अलालत पर बीमारियों के लिबास में दायें बाएं करवटे बदल रहे हैं, इनको खाने की किसी चीज़ का जायेका नहीं और न कोई चीज़ पी सकते हैं, वो आप पर हसरत की नज़र डालते हैं की वो खुद को कुछ फ़ायेदा या नुकसान पहुंचाने पर कादिर नहीं और मैं इन दुखों से अमन में हूँ यह तेरा करम और तेरी नवाज़िश है, बस तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है ऐसा तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव)

और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, अपनी मेहरबानी से मुझ पर रहमत फ़रमा, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले मेरे मौला और मेरे आका, बहुत से बन्दे ऐसे हैं जिन्होंने ने सुबह और शाम की जबकि इनकी मौत का वक़्त करीब आ गया है और फ़रिश्ता-ए-अजल ने अपने साथियों समेत इन्हें घेर रखा है वो मौत की गशियों में, जाँकुनी की सख्तियों में पड़े हैं, वो दायें बाएं नज़र घुमा घुमा कर अपने दोस्तों मेहरबानों और साथियों को देखते हैं जबकि वो बोलने से कासिर और गुफ्तगू करने से आजिज़ हैं, वो अपने आप पर हसरत की निगाह डालते हैं जिसके नफ़ा और नुक़सान पर कुदरत नहीं रखते और मैं ईन तमाम मुहिकलों से महफूज़ हूँ यह तेरा करम और एहसान है बस तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है ऐसा तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, और अपनी मेहरबानी से मुझ पर रहमत फ़रमा ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले मेरे मौला मेरे आका बहुत से बन्दे हैं जिन्होंने ने सुबह और शाम की जब वो ज़िन्दानों और कैदखानों की तंग कोठरियों में तकलीफों और ज़िल्लतों के साथ बेड़ियों में जकड़े एक निगराण से दूसरे सख्तगीर निगराण के हवाले किये जाते हैं बस नहीं जानते के इनका क्या हाल होगा और इनका कौन कौन स जोड़ काटा जाएगा तो वो गुज़ारा मुश्किल और ज़िंदगी दुशवार है! वो अपने आप को हसरत की निगाह से देखते हैं की जिस के नफ़ा और नुक़सान पर अख्त्यार नहीं रखते और मैं ईन सब गर्मों से आज़ाद हूँ, यह तेरा करम और एहसान है बस तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है ऐसा तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, और अपनी मेहरबानी से मुझ पर रहमत फ़रमा, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले मेरे सरदार और मौला बहुत से बन्दे हैं जिन्होंने ने सुबह और शाम की जिन पर कज़ा वारिद हो चुकी है और बलाओं ने इन्हें घेरा हुआ है और वो अपने दोस्तों मेहरबानों और साथियों से जुदा हैं और इन्होंने ने काफ़िरों के हाथों कैदी, न'पसंदीदा और ख़वार होकर शाम की है और दुश्मन ईन को दायें बाएं खींचते हैं जबकि वो काल कोठरियों में बंद हैं और बेड़ियाँ लगी हुई वो ज़मीन पर फैलने वाले उजाले को नहीं देख पाते और न कोई खुशबू सूंघते हैं, वो अपने आप को हसरत से देखते हैं के जिस के नफ़ा और नुक़सान पर वो कुछ भी अख्त्यार नहीं रखते और मैं ईन सब तंगियों से अमन में हूँ यह तेरा करम और एहसान है, बस तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है ऐसा तवाना है, जिसे शिकस्त नहीं होती, ती बुर्दबार है जो जल्दी नहीं करता मोहम्मद (सःअःवःव) और आले मोहम्मद (अःस) पर रहमत फ़रमा और मुझे अपनी नामेताओं का शुक्र करने वालों और अपने एहसान के याद करने वालों में करार दे, और अपनी मेहरबानी से मुझ पर रहमत फ़रमा, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले, वास्ता है तेरी इज़्जत का ऐ करीम की मैं वो तलब करता हूँ जो तेरे पास है और बार बार मांगता हूँ और तेरे आगे हाथ फैलाता हूँ अगर्चेह यह तेरे यहाँ मुजरिम है ऐ परवरदिगार फिर किस की पनाह लूँ और किस से अर्ज़ करूँ सिवाए तेरे मेरा और कोई नहीं क्या तू मुझे हँका देगा जबकि तू ही मेरा तक्या है और तुझी पर मेरा भरोसा है, मैं तेरे ईस नाम के ज़रिये सवाल करता हूँ जिसे तुने आसमानों पर रखा तो वो मुस्तक़िल हो गए और ज़मीन पर रखा तो कायेम हो गयी और पहाड़ियों पर रखा तो वो अपनी जगह

जम गए और रात पर रखा तो वो काली हो गयी और दिन पर रखा तो वो चमक उठा, हाँ तू मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी तमाम हाजतें पूरी कर दे और मेरे सभी गुनाह माफ़ फ़रमा दे, छोटे भी और बड़े भी, और मेरे रिजक में फ़राकी फ़रमा की जिस से मुझे दुन्या व आख़ेरत में इज्जत हासिल हो, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले मेरे मौला मैं भी तुझी से मदद माँगता हूँ, बस मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी मदद कर मैं तेरी पनाह लेता हूँ, बस मुझे पनाह दे और अपनी इता'अत के ज़रिये मुझे अपने बन्दों की इता'अत से बे'नेयाज़ कर दे, अपना सवाली बना कर लोगों का सवाली बन्दे से बचा ले और फ़िक्र (भीख) की ज़िल्लत से निकाल कर बे'नेयाज़ी की इज्जत दे और ना'फ़रमानी की ज़िल्लत के बजाये फ़रमाबरदारी की इज्जत दे, तुने मुझे अपने कसीर बन्दों पर जो बड़ाई दी है वो महज़ तेरा फ़ज़ल व करम है, न यह के मैं ईस का हकदार हूँ, ऐ माबूद तेरे ही लिये हम्द है की तुने यह मेहरबानियाँ फ़रमायीं मोहम्मद (स:अ:व:व) और आले मोहम्मद (अ:स) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्रगुजारों और अपने एहसानों को याद करने वालों में करार दे

**फिर सजदे में जाएँ और कहें**

मेरे कमतर चेहरे ने तेरी ज़ाते अज़ीज़ ओ जलील को सजदा किया, मेरे फामी व पस्त चेहरे ने तेरी हमेशा क्रायेम रहने वाली ज़ात को सजदा किया, मेरे मोहताज चेहरे ने तेरी बे'नेयाज़ व बुलंद ज़ात को सजदा किया, मेरे चेहरे कान आँख गोशत खून चमड़े और हड्डी ने और मेरा जो कुछ रुप ज़मीन पर है ईस ने आलमीन के रब को सजदा किया! खुदाया मेरी जहालत को बुर्दबारी से ढांप ले, मेरी मोहताजी पर अपनी दौलत बरसा दे, मेरी पस्ती को अपनी बुलंदी व अखत्यार से दूर फ़रमा और मेरी कमजोरी को अपनी कुव्वत से दूर कर दे और मेरे खौफ़ को अपने अमन से मिटा दे और मेरी खताओं और गुनाहों को अपनी रहमत से बख़्श दे, ऐ रहम वाले, ऐ मेहरबान, ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह लेता हूँ *फलां बिन फलां* के हमलों से और ईस के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ बस इससे मेरी किफ़ायत कर जैसे अपने अंबिया की और औलिया की अपने मख्लूक से अपने नेक बन्दों की किफ़ायत फ़रमाई, अपने मख्लूक में से सरकशों और शरीरों से जो तेरे दुश्मन थे और सारी मख्लूक के शर से अपनी रहमत के साथ, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले, बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है, और अल्लाह हमारे लिये काफ़ी है जो बेहतरीन कारसाज़ है!

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व आले मुहम्मद (तीन बार)